2 फरवरी 2015, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 37, अंक : 21 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

फरवरी (प्रथम), 2015 (वीर नि. संवत्-2541) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

महामस्तकाभिषेक एवं तृतीय वार्षिकोत्सव

टोडरमल स्मारक में 2012 में संपन्न हुए भव्य पंकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का तृतीय वार्षिक महोत्सव एवं पंचतीर्थ जिनालय में स्थित तीर्थंकर भगवंतों का भव्य महामस्तकाभिषेक का कार्यक्रम दिनांक 20 से 22 फरवरी 2015 को संपन्न होने जा रहा है।

कृपया अधिकतम संख्या में सम्मिलित होकर धर्मलाभ लें। इस अवसर पर त्रिदिवसीय पंचकल्याणक विधान का आयोजन किया जायेगा। इसके अतिरिक्त डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं ब्र. सुमतप्रकाशजी आदि अनेक विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिलेगा। विस्तृत जानकारी हेतु आमंत्रण पत्रिका देखें।

वेदी शिलान्यास सानंद संपन्न

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट भोपाल के तत्त्वावधान में दिनांक 23 से 25 जनवरी 2015 तक श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक मंडल विधानपूर्वक पंच बालयति तीर्थंकर वेदी शिलान्यास संपन्न हुआ।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

दिनांक 25 जनवरी को भोपाल-विदिशा मार्ग पर स्थित नवीन संकुल ज्ञानोदयतीर्थ में वेदी शिलान्यास का कार्यक्रम संपन्न हुआ, जिसमें लगभग 1000 साधर्मीजन उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई, श्री जे.के. जैन (कलेक्टर-रायसेन), डॉ. आर.के. जैन विदिशा एवं समस्त ट्रस्टीगण भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

विधि-विधान के कार्य ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली द्वारा संपन्न हुये।

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का विदेश कार्यक्रम

डॉ. भारिल्ल की तरह ही उनके शिष्य डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर को विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 'जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका' **(JAANA)** ने धर्मप्रचारार्थ अमेरिका में आमंत्रित किया है, यह उनकी छठी अमेरिका यात्रा है। उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है -

02 जून से 08 जून तक **शिकागो**, 09 जून से 15 जून तक **डलास-टेक्सास**, 16 जून से 22 जून तक **मियामी-फ्लोरिडा**, 23 जून से 27 जून तक **ऑर्लेन्डो**, 28 जून से 2 जुलाई तक **अटलान्टा (जाना शिविर)**, 2 जुलाई से 5 जुलाई तक **अटलान्टा (जैना कन्वेन्शन)**। आप उन्हीं स्थानों पर रुकेंगे, जहाँ डॉ. भारिल्ल रुकेंगे।

डॉ. भारिल्ल का विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष 2015 में भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। यह उनकी 33वीं विदेश यात्रा है। जिन भारतवासी बन्धुओं के परिवार या सम्बन्धी निम्न स्थानों पर रहते हों, वे उन्हें सूचित कर दें। उनकी सुविधा के लिए वहाँ के फोन, फैक्स एवं ई.मेल दिये जा रहे हैं, जहाँ डॉ. भारिल्ल ठहरेंगे। डॉ. भारिल्ल, एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के कार्यक्रमों का आयोजन (**JAANA**) द्वारा किया जा रहा है। डॉ. भारिल्ल का नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है -

क्र.	शहर	सम्पर्क-सूत्र	दिनांक
1.	लन्दन	**Dr. Dinkarbhai Shah 114, ASHURST ROAD, COCK FOSTER BARNET HERTS, EN4, 9LG (U.K.) Ph.-02084408994 Cell : 07712552973 Email : dinker_shah@yahoo.co.uk**	12 से 19 जून
2.	शिकागो	**Niranjan Shah (R) 847-330-1088 Bipin Bhayani (O) 815-939-3190 (R) 815-939-0056**	20 से 27 जून
3.	अटलांटा	**Atul Khara R : 972-8676535 O : 972-424-4902 C : 469-831-2163 Email - insty@verizon.net**	28 जून से 5 जुलाई
4.	डलास	**Atul Khara R : 972-8676535 O : 972-424-4902 C : 469-831-2163 Email - insty@verizon.net**	6 से 12 जुलाई
5.	न्यूयार्क	**Abhay/Ulka Kothari C : 516-314-6937 Emil-ukothari@verizon.net Dr. Hemant Bhai Shah Email-hemantshahmd@aol.com (M) 201-759-3202**	13 से 15 जुलाई

सम्पादकीय –

राजू की दर्द भरी कहानी

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

राजू के पिता को राजू की दर्द भरी कहानी सुनकर दु:ख तो हुआ, पर फिर भी उन्होंने कहा – ''बेटा ! कुछ भी हो, परन्तु तुम्हें अपने गुरुजनों के बारे में ऐसा नहीं सोचना चाहिए। वे तुम्हारे गुरु हैं, अत: आदरणीय हैं, क्या तुमने एकलव्य की कहानी नहीं पढी ? क्या तुमने महाभारत में गुरु द्रोण और अर्जुन आदि का परस्पर व्यवहार नहीं देखा ?

भविष्य में कभी ऐसी भूल नहीं करना तथा जो लड़के ऐसा कोई भी काम करें, उनका साथ नहीं देना। समझे।''

''समझ गया, पापा ! अच्छी तरह समझ गया। क्यों पापा ! क्या यहाँ इससे अच्छा और कोई विद्यालय नहीं है ?''

''हाँ, एक ईसाई मिशन का विद्यालय है, जहाँ पढाई एकदम बढिया होती है, पर''

''पर क्या ?''– राजू ने जिज्ञासा प्रगट की।

''कुछ नहीं, सोचूँगा, इस विषय में क्या हो सकता है।'' – पापा ने कहा।

जब प्राचार्य महोदय का अखबार के पूरे पृष्ठों का आद्योपांत स्वाध्याय हो चुका तो एक घंटे बाद रुआव के साथ ऑफिस से बाहर निकले। देखते क्या हैं कि पन्द्रह सौ विद्यार्थियों में केवल दो-सवा दो सौ विद्यार्थी ही चार कक्षाओं में पढते दिखाई दे रहे हैं। शेष सभी सोलह कक्षाएँ खाली पड़ी थीं।

कक्षाओं को खाली देखकर पहले तो उन्हें जरा-सा जोश आया, पर शिक्षककक्ष तक पहुँचते-पहुँचते उनका वह जोश भी ठंडा हो गया।

फिर क्या था, बड़े ही विनम्र स्वर में बन्धुत्वभाव व्यक्त करते हुए बोले –''क्यों बन्धुओं ! क्या हो रहा है ?

अध्यापकों में अधिकांश तो अपने अपराध बोध के कारण नीची निगाहें करके चुप रहे, पर एक चालाक प्रकृति के मुँहबोले अध्यापक ने साहस बटोरकर बहाना बनाते हुए कहा –''सर ! क्या है कि आज ठंड अधिक पड़ रही है न ? इस कारण अधिकांश लड़के तो आये ही नहीं थे। हाँ, जो थोड़े से आये थे, वे भी दाँत किटकिटा रहे थे। दो-चार ने पीरियड लेने को भी कहा, पर आप ही सोचिए न ! भला ऐसी ठंड में यदि दस-पन्द्रह लड़कों को पढाने बैठ भी जावें तो जो नहीं आये, वे पिछड़ जाते न ? इसलिए हम लोगों ने सोचा – ''जब पूरी उपस्थिति होगी तभी पढाना ठीक रहेगा।'' (क्रमश:)

वेदी शिलान्यास सानंद संपन्न

हेरले (महा.) : यहाँ सर्वोदय स्वाध्याय ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 20 से 22 जनवरी 2015 तक श्री भक्तामर मंडल विधानपूर्वक तीन चौबीसी तीर्थंकर मंदिर का 72 वेदी शिलान्यास, मूलनायक भगवान महावीर चैत्यालय का उद्घाटन तथा चैत्यालय में मूर्ति विराजमान करने का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के 'भगवान बनने का उपाय भेदविज्ञान' विषय पर सरल-सुबोध भाषा में हुए पाँच प्रवचन विशेष रूप से सराहे गये। साथ ही ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली एवं पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर के प्रवचनों का भी लाभ प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम में मूलनायक भगवान महावीर की प्रतिमा श्री बालासाहेब वसवाडे परिवार द्वारा विराजमान की गई।

विधि-विधान के कार्य एवं संपूर्ण कार्यक्रम ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पण्डित अशोकजी उज्जैन एवं पण्डित रमेशजी इन्दौर द्वारा संपन्न हुये।

पंचकल्याणक वार्षिकोत्सव संपन्न

जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ बड़ाफुहारा स्थित श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जैन मंदिर का वार्षिकोत्सव दिनांक 13 से 18 जनवरी तक कर्मदहन मंडल विधानपूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में स्थानीय पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

विधान के आमंत्रणकर्ता श्री निर्मलकुमारजी जैन परिवार थे।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा हुये।

परीक्षा सामग्री शीघ्र भेजें

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.) की शीतकालीन परीक्षायें 27 जनवरी 2015 को संपन्न हो चुकी हैं। सम्बन्धित परीक्षा केन्द्र शीघ्रातिशीघ्र परीक्षा सामग्री परीक्षा बोर्ड कार्यालय जयपुर को भिजवाने का कष्ट करें, ताकि परीक्षा परिणाम व प्रमाण-पत्र जैसे कार्य प्रभावित नहीं हों।

– ओ.पी.आचार्य (प्रबन्धक-परीक्षा विभाग)

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

धर्म क्या, क्यों, कैसे और किसके लिए – *(पाँचवीं किश्त, गतांक से आगे)*

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

पिछले अंक में हमने पढा – ***हमारी कल्पना के भगवान इन अनेकों श्रेणियों में सबसे ऊपर एक सुपरमैन की श्रेणी में वर्गीकृत किये जा सकते हैं, जो भोग में भी सर्वोच्च हैं और योग में भी, जो शारीरिक रूप से भी सर्वाधिक बलिष्ठ हैं और सर्वाधिक साधन–संपन्न व प्रभावशाली भी;*** **पर हमारी कल्पना के ये भगवान भी हमारी ही तरह चुनौती रहित या स्पर्धा रहित नहीं हैं, इनके कर्तृत्व और सत्ता को चुनौती देने वाले और उसमें दखलंदाजी करने वाली अन्य शक्तियाँ भी लोक में (हमारी कल्पना में) विद्यमान हैं।** अब आगे पढिये –

आखिर ऐसा हुआ क्यों ? भगवान के इस उक्त स्वरूप ने हमारी कल्पना में आकार क्यों और कैसे लिया ? क्यों नहीं हम भगवान के सही स्वरूप को जान पाए, पहिचान पाये ?

इसका सबसे बड़ा कारण है हमारा वर्तमान में ही निमग्न रहना।

बात अटपटी तो लगेगी, आखिर इन दो बातों के बीच सम्बन्ध ही क्या है ?

इनका सम्बन्ध बड़ा गहरा है।

वर्तमान में निमग्न होने से मेरा तात्पर्य है हमारा आज की तत्कालीन परिस्थितियों में अत्यंत व्यस्त रहना। हम सभी अपने वर्तमान की समस्याओं से त्रस्त इतने अस्त–व्यस्त रहते हैं कि इनसे ऊपर उठकर सोचने का हमें अवकाश ही नहीं रहता है, विचार ही नहीं आता है, वे हमारे लिये महत्वपूर्ण ही नहीं रह जाती है।

एक ओर हमारे शरीर में कैंसर पल रहा हो और दूसरी ओर पेट में भयंकर दर्द हो तो हमें पेट के दर्द से छुटकारा चाहिए, अभी इसी वक्त, हर कीमत पर, क्योंकि यह दर्द हमें बेहाल किये हुये है। कैंसर तो अभी हमें दिखता ही कहाँ है, वह तो सिर्फ डॉक्टर को दिख रहा है, हम तो डॉक्टर के कहने से मात्र जान पाये हैं कि हमें कैंसर है। कैंसर की वेदना अभी हमने भोगी कहाँ है, पर नहीं, यह पेट का दर्द तो मैं सह ही नही सकता हूँ, जो भी मेरा यह पेट का दर्द दूर कर सके वही मेरे लिये भगवान है, वही सब कुछ है, उसके लिये मैं कुछ भी कर सकता हूँ।

हमारा रवैया कुछ इसप्रकार का होता है कि देखते हैं एक बार यह पेट का दर्द मिट जाये फिर कैंसर के बारे में भी सोचेंगे। होता यह है कि जब तक पेट का दर्द कम होता है, उससे पहले ही दुकान में बड़ा ग्राहक आ जाता है, बच्चे के स्कूल जाने का समय हो जाता है या टी.वी. पर हमारा पसंदीदा सीरियल आने का समय हो जाता है, अब यह सब तो तुरन्त निपटाने जरूरी हैं न, इन्हें तो टाला नहीं जा सकता है।

दर्द की दवा (pain killar) तत्काल, मात्र तत्काल का काम करती है और मर्ज का इलाज हमेशा के लिये होता है, होना चाहिए; हालांकि इसमें समय लग सकता है।

हमारा दृष्टिकोण इतना उथला है कि हम तो अपने दु:ख–दर्दों को भी सही तरह से नहीं पहिचानते हैं, तब हम उनका सही इलाज भी कैसे कर पायेंगे ?

हमें सर में दर्द होता है तो हम सरदर्द दूर करने के उपाय करने लगते हैं, सर दबाते हैं, दर्दनाशक (pain killar) दवा खाते हैं, हम उस कारण का, उस रोग का विचार नहीं करते हैं, जिसके कारण सरदर्द हो रहा है। सरदर्द रोग नहीं, रोग का लक्षण है, रोग का फल है जो कि हमेशा के लिये तो रोग के दूर होने पर ही दूर हो सकता है। मर्ज के इलाज से दूर हो सकता है।

धर्म हमारे मर्ज का इलाज है, अनादि से चले आ रहे भवभ्रमण के मर्ज का स्थायी इलाज; पर हमें इसकी चाहत ही नहीं है, दरअसल अपने वर्तमान के दुखड़ों में ही हम इतनी गहराई तक डूबे हुए हैं कि हमें अपने त्रैकालिक लक्ष्य के बारे में सोचने का अवकाश ही नहीं है। बस ! हमें तो अपने वर्तमान के झंझटों से निजात चाहिये, हर कीमत पर, इसी वक्त।

धर्म का अवलम्बन हमें अपने वर्तमान दर्द की दवा नहीं दिखाई देता है, हाँ ! वह हमारी कल्पना का भगवान कदाचित (हमारी कल्पना के अनुसार) हमारे इन दुखड़ों को दूर कर सकता है, इसलिये हम उस भगवान के दरबार में तो हाजिरी लगाते हैं, मत्था टेकते हैं, पर भगवान के द्वारा बतलाये गये धर्म के मार्ग पर ध्यान ही नहीं देते हैं।

अपने वर्तमान दु:खों को दूर करने के लिये हम मात्र स्थापित भगवानों की ही शरण में नहीं जाते हैं, वरन हम उन सभी को भगवान मानने और पूजने को हमेशा तैयार रहते हैं जो हमें अपने इन दुखड़ों से मुक्ति दिलाने में सहायक प्रतीत होते हों, चाहे फिर यह हमारा भ्रम ही क्यों न हो। **यही कारण है कि हमारी भगवानों की लिस्ट में नित नए नाम जुड़ते जा रहे हैं और हम पाते हैं कि इन नये भगवानों के दरबार में पुराने स्थापित भगवानों की अपेक्षा ज्यादा भीड़ जुटती है, ज्यादा मन्नतें माँगी जाती है और ज्यादा चढावा आता है।** (क्रमश:)

2 फरवरी 2015, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के संबंध में उनके समकालीन मनीषियों द्वारा व्यक्त किये गये हृदयोद्‌गार –

श्री कान्तिलाल शाह मुम्बई ने कानजीस्वामी के प्रति जो श्रद्धा एवं कृतज्ञता ज्ञापित की, वह उन्हीं के शब्दों में पढिये –

''आपने समाज का बड़ा उपकार किया है। वस्तु तत्त्व का विवेचन, यथार्थ रूप में विवेचन आप से ही मिलता है। आप स्वयं भी भेद-विज्ञान के साक्षात् अवतार हैं। एक बार जो आपका प्रवचन सुन लेता है, वह आपका ही हो जाता है। हमारे तो वे धर्म-पिता हैं। उनके अनन्त उपकार का समाज व मैं अत्यन्त ऋणी हूँ। उनकी अमृतवाणी सुनकर एवं परोक्ष में उनके प्रवचन पढकर अगणित जीवों ने अपना आत्मकल्याण किया है। आपने ही जैन तत्त्व को समझने की सच्ची दृष्टि दी है। जैनधर्म की आत्मा-वस्तु की स्वतंत्रता व्यवहार, निश्चय, निमित्त, उपादान एवं क्रमनियत आदि का आपने समाज के सामने इतना सुन्दर निष्कर्ष निकाल कर रखा है कि जनसाधारण की दृष्टि भी बदल गई है। उनके उपकार का बदला दे सकना असम्भव है। मेरी मंगल कामना है कि पूज्यश्री के बताये हुए जैन शासन की विश्वभर में जय-जयकार हो और गुरुदेव दीर्घकाल तक हमारा मार्ग प्रदर्शित करते रहें।''

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

14 व 15 फरवरी	हस्तिनापुर	शिलान्यास
20 से 22 फरवरी	जयपुर (राज.)	वार्षिकोत्सव
1 से 6 अप्रैल	विदिशा (म.प्र.)	पंचकल्याणक
12 अप्रैल	दिल्ली	उपकार दिवस व मुमुक्षु मण्डल दिल्ली का स्वर्ण जयंती समारोह
17 से 22 मई	पारले (मुम्बई)	पंचकल्याणक
24 मई से 10 जून	मेरठ	प्रशिक्षण-शिविर
11 जून से 15 जुलाई	विदेश	तत्त्वप्रचारार्थ

शोक समाचार

(1) अहमदाबाद (गुज.) निवासी श्री गम्भीरमलजी जैन सेमारी वालों का 82 वर्ष की आयु में दिनांक 1 जनवरी 2015 को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आप टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित होने वाले शिविरों में नियमित रूप से रहकर धर्मलाभ लेते थे। आप और आपका पूरा परिवार टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित होने वाली तत्त्वप्रचार की गतिविधियों से गहराई से जुड़े हुए हैं, उनका भरपूर लाभ लेते हैं और सहयोग देते हैं। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 5000/- रुपये प्राप्त हुये।

(2) रत्नत्रयतीर्थ ध्रुवधाम बांसवाड़ा के प्रेरणास्रोत श्री धुलजी भाई ज्ञायक बांसवाड़ा का दिनांक 23 जनवरी 2015 को 102 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

ज्ञातव्य है कि आप श्री महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा के पिताजी थे। टोडरमल स्मारक द्वारा संचालित होने वाली तत्त्वप्रचार की गतिविधियों से गहराई से जुड़े हुए थे, उनका भरपूर लाभ लेते थे और सहयोग देते थे।

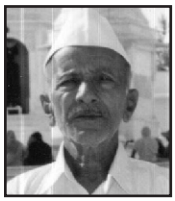

(3) बड़ामलहरा (म.प्र.) निवासी श्री प्रेमचंदजी जैन का 82 वर्ष की आयु में दिनांक 24 जनवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित दिनेशजी शास्त्री बड़ामलहरा के पिताजी थे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

प्रकाशन तिथि : 28 जनवरी 2015

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए रेनबो ऑफसेट प्रिण्टर्स, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127